राज
कॉमिक्स
मूल्य 15.00 संख्या 200
नागराज
और कालदूत
मुफ्त
नागराज का एक
पोस्टर
PRATAP
MULICK

लेखक: राजा
संपादक: मनीष चन्द्र गुप्त
कलानिर्देशक: प्रताप मुलीक
चित्रकार: चंदू
सुलेख: उदय भास्कर
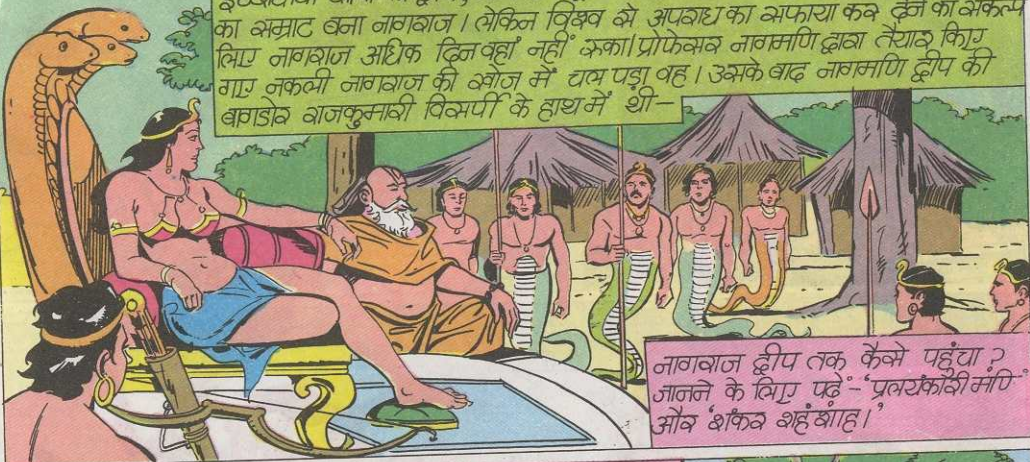
उसने झपटकर अपने शस्त्र उठा लिए—
जल्दी चलो पुजारी बाबा! हमें कुछ करना होगा।
उधर बस्ती में भयानक बाजों ने नागों के बीच आतंक फैलाया हुआ था—
क्वैंक
क्वैंक
क्वैंक
उफ़!
आह!
तभी नागकुमारी विसर्पी क्रोध में उफनती हुई वहां पहुंची। अपनी प्रजा और सैनिकों की बाजों द्वारा होती दुर्दशा देख उसने अपना धनुष बाजों पर तान दिया—
मैं इन्हें जिन्दा नहीं जाने दूंगी, पुजारीबाबा!
क्वैंक
क्वैंक
सर्र र
खच्च
उस भयानक हमले से घबराकर बाजों का झुण्ड आकाश की ऊंचाइयों में खो गया—
आज भी बाज हमारे कई नागों को दबोच ले जाने में सफल हो गए!
आह!
और अगले ही क्षण उसने बाजों पर बाणों की वर्षा कर दी—
क्वैंक
खच्च
सर्र र

द्वीपवासियों ने राजकुमारी को घेर लिया –
राजकुमारी जी, हमें इस मुसीबत का हल तो ढूंढना ही होगा।
वरना एक दिन यह द्वीप वीरान हो जाएगा।
?

इस मुसीबत को केवल एक ही व्यक्ति समाप्त कर सकता है और वह है नागराज।

नाग सम्राट नागराज!

जैसे भगवान ने उनकी पुकार सुन ली। आसमान हैलीकॉप्टर की आवाज से गड़गड़ा उठा –
गड़ गड़ गड़
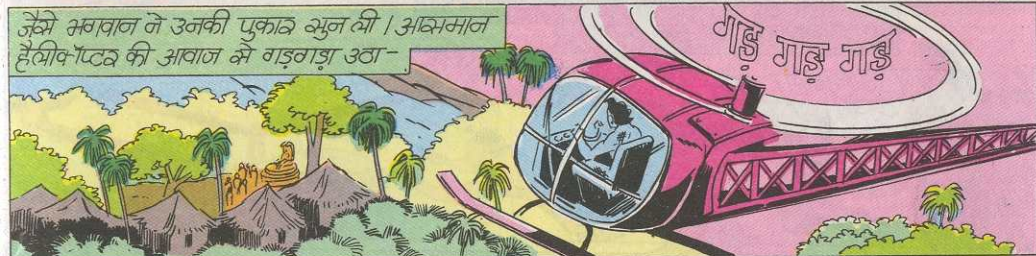
और नाग मानवों में एक
हर्ष की लहर दौड़ पड़ी। वे
खुशी चीख उठे –
नागराज!
लो नागराज आ गया।

नागराज हैलीकॉप्टर मैदान में उतारकर द्वीपवासियों के पास पहुंचा –
राजकुमारी विसर्पी... पुजारी बाबा! य... यह सब क्या हो रहा है?
द्वीप पर बाजों का आक्रमण हुआ था, नागराज!
वे हमारे कई साथियों को उठाकर ले गए।

नागराज क्रोधित हो उठा –
ओह! इन शैतानों को समाप्त करने का कोई उपाय शीघ्र ही सोचना पड़ेगा।

तभी हैलीकाप्टर पर चढ़ा शूलकंट चीखा—
राजकुमारी ऽऽऽ पुजारी बाबा ऽऽऽ
क्या हुआ शूलकंट?
ओह! इसे क्या हुआ?
देखिए। यहां एक अन्य मानव भी है।
यह सुनते ही प्रहरी नाग क्रोध से फुंफकारते हुए हैलीकॉप्टर की ओर लपके—
ओह! नहीं ठहरो!
फूंऽऽफूंऽऽ
नागराज विद्युत की तेजी से हवा में लहराया—
ठहरो! रुक जाओ।
फूंऽऽफूं
क्रोधित नाग प्रहरियों को वहीं रोककर नागराज हैलीकॉप्टर में घुस गया—
अगले ही क्षण नागराज के साथ नागदंत को हैलीकॉप्टर से बाहर आते देख सभी नाग चौंक उठे—
नागराज! कौन है यह मानव?
नागदंत! जिसने नागराज बनकर पूरे विश्व के सामने मुझे आतंकवादी बना दिया था।

ओह! लेकिन तुम इसे यहां क्यों ले आए नागराज? द्वीप के नियम व कानून के अनुसार यहां बाहर का कोई भी मानव आकर जीवित नहीं रह सकता।

?

मैं जानता हूं विसर्पी!...

...लेकिन नागदंत केवल मानव नहीं है। मेरी जितनी शक्तियों का स्वामी है यह ...

...विसर्पी! पुजारी बाबा एवं समस्त नागमानवो, द्वीप के अलावा अगर यह शैतान कहीं और रहा तो पूरे विश्व की गर्दन पर तलवार बनकर लटकता रहेगा। क्या आप मानव जाति का विनाश चाहते हैं?

कदापि नहीं नागराज, हम इसे द्वीप पर ही कैद में रखेंगे।

चलो नागदंत!

शीघ्र ही पुजारी बाबा उन्हें लेकर बस्ती से दूर बनी एक झोपड़ी के पास पहुंचे–

नागराज! यह है द्वीप का कारागृह।

रात घिर आई थी– नागराज नागदंत की तरफ से निश्चिंत हो चुका था। नागमणि द्वीप के निवासी नागराज की वापसी का जश्न मना रहे थे–

बताओ नागराज! शूलकंट जीतेगा या असिपक्ष?

?
कहां है बे भुजंगभट्ट! लगता है डरकर भाग गया।
नाग के रूप में विश्राम कर रहा भुजंगभट्ट यह ललकार सुनकर फुंफकार उठा—
फंऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
शीघ्र ही वह नागमानव के रूप में आ गया—
सावधान नागदंत! मैं तुम्हें कैद से भागने नहीं दूंगा।
और अगले ही क्षण भुजंगभट्ट की पूंछ की फौलादी टक्कर नागदंत की छाती पर पड़ी—
आह
फिर भुजंगभट्ट ने नागदंत को संभलने का अवसर न दिया—
उफ

और उधर लड़खड़ा गया असि पक्ष -
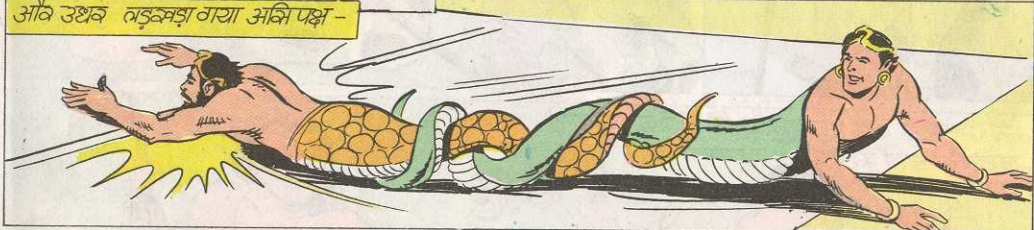
इधर घायल हुए भुजंग भट्ट को नागदंत भाले से गोदता चला गया –
आह... आह!
और फिर घायल भुजंग भट्ट को तड़पता छोड़ वह भाग निकला।

अंतिम सांसें गिनता हुआ भुजंग भट्ट नाग रूप में आकर, रेंगता हुआ नगाड़े पर चढ़ गया –
मुझे मरने से पहले नागदंत के भागने का समाचार नागराज तक पहुंचाना होगा।

और फिर वह अपनी आखरी सांस तक नगाड़े पर फन पटकता चला गया –
ढम ढम ढम ढम

उधर नागराज ने शूलकंट की विजय पर तालियां बजाईं –
बहुत अच्छे शूलकंट, तुम निश्चि सर्वशक्तिमा
तड़ तड़
तड़
तड़
और तभी वातावरण नगाड़े की आवाज से गूंज उठा।

चौंक उठा नागरा –
ढम ढम ढम
पुजारी बाबा, यह नगाड़े की आवाज कैसी ?
नागराज! लगता है भुजंगभट्ट किसी विपदा में है।
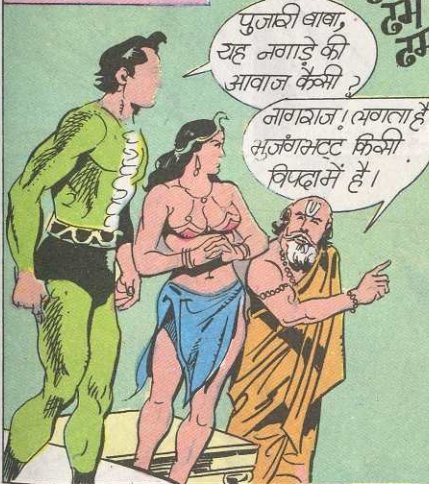
शीघ्र ही वे कारागृह तक पहुंच गए –
ओह! महाबली भुजंगभट्ट तो मृत पड़ा है।
हां! नागदंत फरार हो गया।

और अगली सुबह नागमणि द्वीप पर नागदंत की खोज प्रारम्भ हो गई-
स्वयं नागराज भी तेजी से नागदंत को खोजता बढ़ रहा था-
नागदंत को जल्दी खोजना आवश्यक है!
अरे! यह गुफा कैसी? इसमें से यह धुआँ कैसा?
मुझे इसमें प्रवेश करना चाहिए, किन्तु यह भारी चट्टान!
नागराज ने अपनी अतिशक्ति का प्रयोग किया-
जरूर उस नागदंत ने ही इस चट्टान से इस गुफा का मुंह बंद किया होगा।
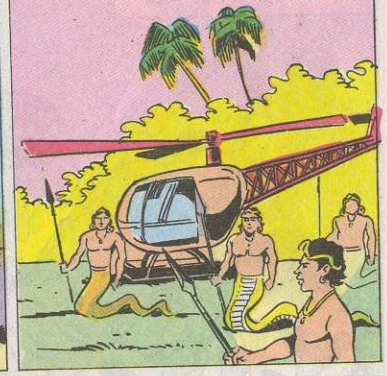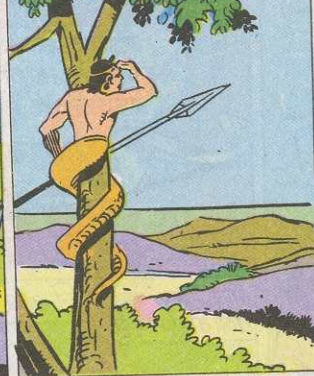
शीघ्र ही उसने चट्टान को हटा फेंका–
वह जरूर ही अंदर छुपा होगा।
आगे तो अंधेरा बढ़ता जा रहा है।

ओह! उस मोड़ से रोशनी आ रही है।

हर्रर्रर्रर्रर्र र्रर्र
ओह! यह तो किसी भयंकर जीव के सांस लेने का स्वर लगता है।

वह भयानक दृश्य देखते ही विस्मय से आंखें फैल गईं नागराज की–
ओह! यह कौन है?

भयानक सर्प फुंकार उठा–
कालदूत की गुफा में घुसकर उसकी तपस्या भंग करने की चेष्टा कैसे की दुष्ट मानव?...

...मानव इस द्वीप पर कदम नहीं रख सकता... और तू मेरी गुफा तक घुस आया... किन्तु अब तुझे मरना होगा।
लेकिन बाबा...

फुस्स्स्सssss
कालदूत के तीनों मुखों से जहरीली फुंकारें निकलीं।
लेकिन नागराज अपनी जगह छोड़ चुका था-
फुस्सsss फुस्सss
उफ्!
चट्टान के स्थान पर एक गड्ढा नजर आने लगा-
ooo अगर ये फुंकार मुझसे टकरा जाती तो मैं भी इस पत्थर की तरह गल जाता।
फिर तो कालदूत ने फुंकारों की वर्षा कर दी-
फूस्सsss फूस्सsss
जिसके फल स्वरूप गुफा की छत से भारी-भारी चट्टानें टूटकर नीचे गिरने लगीं।
और नागराज उन चट्टानों के बीच फंस गया-
बड़ी फुर्ती दिखाकर बच रहे हो बेटा, अब बताओ कैसे बचोगे?
मेरी बात तो सुनिए बाबा मैं इस द्वीप का...

तुरन्त ही कालदूत ने फिर उस पर हमला किया–
फुस ऽऽऽऽऽ
नागराज ने एक बड़ी चट्टान उठाई और विष के उस गोले की तरफ उछाल दी–
उफ़! ऐसे कब तक बच पाऊंगा मैं?
नागराज जैसे बलशाली के भी आज दांतों तले पसीना आ गया।
कालदूत की अगली फुंकार का सामना उसने अपनी जहरीली फुंकार से किया–
आज मौत निश्चित है, नागराज!
फुस्स
सर्र
दोनों के टकराने के परिणामस्वरूप कालदूत की फुंकार ने अपना थोड़ा रास्ता बदल दिया।
किन्तु फिर भी वह नागराज के कंधे को झुलसा गई–
आह! उफ़!
नागराज को लगातार अपनी फुंकार से बचता देख कालदूत ने उस पर अपनी बलशाली पूंछ का प्रहार किया–
बहुत खेल लिया रे मानव! अब तेरी ईह लीला यहीं समाप्त करता हूं। इस पूंछ के वार से अब तू नहीं बच सकता।
ओह! आह!

कालदूत के तीनों हथियार उसकी पूंछ के नीचे दबे नागराज की तरफ बढ़ने लगे कि तभी-
ठहरिये महात्मा कालदूत! कृपाकर रुक जाइए!
कौन है?
नागकुमारी- विसर्पी!
यह नागराज है महात्मन! नागमणि द्वीप के सम्राट नागराज।
क्या? एक मानव नागमणि द्वीप का सम्राट!
यह विलक्षण मानव है, महात्मन! सैकड़ों नाग मानवों के सम्मुख कुल-देवी का आशीर्वाद मिला है इसे।
विसर्पी ने नागराज के सम्राट बनने की सारी कहानी कह सुनाई।
तब-
ओह, अगर ऐसा है नाग सम्राट नागराज, तो हम तुमसे इस भूल की क्षमा चाहते हैं।
मुझे शर्मिन्दा न करें, महात्मन।...
...लेकिन मेरी एक जिज्ञासा अवश्य शांत करें महात्मन, कि आप कौन हैं और यहां क्या कर रहे हैं?
नागराज! मैं इस द्वीप पर कदम रखने वाला पहला इच्छाधारी नाग हूं... जिसने दुनिया भर के इच्छाधारी सांपों को अपने तपोबल से इस द्वीप पर लाकर आबाद किया है।

...दुनिया भर के सभी सांपों से संपर्क बनाने के लिए मैं यहां तपस्या-रत था। आज दुनिया का प्रत्येक सांप मेरी आज्ञा मानता है।

महात्मन! एक खूंखार अपराधी नागदंत हमारी कैद से निकल भागा है। हम उसे ही ढूंढ़ते फिर रहे हैं।
लेकिन तुम्हारे चेहरे पर यह परेशानी के भाव क्यों हैं?

ओह! केवल इतनी सी बात। आओ मैं तुम्हें दिखाता हूं कि नागदंत कहां है?
दिखाइए, महात्मन!

शीघ्र ही कालदूत ने अपने मुंह से एक मणि उगल कर हाथ में ले ली—
नागराज! अपनी इच्छित वस्तु की कामना करके इस मणि में देखो!

नागराज ने मणि हाथ में लेकर नागदंत का नाम लिया ही था कि मणि जगमगा उठी—

और उसमें दृश्य बदलने लगे—
हा हा हा कुछ ही देर बाद मैं इस द्वीप से भी नागराज की कैद की तरह ही फरार हो जाऊंगा।

तभी-
अरे! यह एकाएक अंधेरा कैसे छाता जा रहा है?

और जैसे ही नागदंत ने आसमान की ओर देखा-
अरे! इतने विशालकाय बाज! ये तो मेरी ही तरफ आ रहे हैं।

बाज तेजी से नागदंत पर झपटे-
लेकिन वह जमीन पर लेटकर बच गया।

शीघ्र ही खड़े होकर उसने पेड़ की मोटी सी टहनी उठा ली और-
चीं चीं चीं

नागदंत बहुत बहादुरी से उनका सामना कर रहा था-

किन्तु तभी एक बाज पीछे से नागदंत पर झपटा। और-

ओह! महात्मन्! नागदंत को तो बाज उठाकर ले गए।

और फिर नागराज कालदूत से विदा लेकर गुफा से बाहर आ गया –

चलो विसर्पी! हमें नागदंत को बाजों से बचाना है। महात्मा कालदूत से हम बाद में मिलेंगे।

और फिर मानवता का रक्षक चल पड़ा बाजों की खोज में –

अब दोनों समस्याओं का हल एक ही जगह मिलेगा।

और जल्दी ही दोनों खुले मैदान में आ गए –

अब हमें बाजों के हमले की प्रतीक्षा करनी होगी।

कुछ ही देर बाद –

लो नागराज! जिनका तुम्हें इंतजार था वे आ गए। सांपों के दुश्मन।

हां, विसर्पी! तैयार हो जाओ, अब हमें इनके सहारे नागदंत तक पहुंचना है।

तभी नागराज बाज की आंखों में मानवी आंखें देखकर चौंक पड़ा–
अरे! यह तो पहले ही किसी और के सम्मोहन में बंधा है।
मुझे देखना होगा कौन है वह?
नागराज ने पुनः एकाग्र होकर उसकी आंखों में झांका।
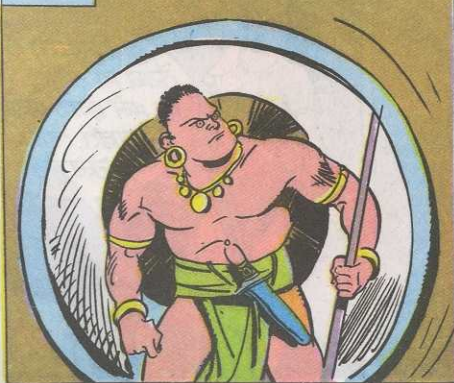
जल्दी ही नागराज को वह बाज नजर आने लगा जो विसर्पी को ले उड़ा था—
अरे! वह तो उस द्वीप की तरफ उड़ रहा है।
उधर वह बाज विसर्पी को लेकर टापू की धरती की तरफ बढ़ने लगा—
अगले ही पल वह एक विशालकाय बाज की मूर्ति के ऊपर मंडरा रहा था—
और फिर मूर्ति की खुली हुई चोंच के ऊपर पहुंचकर उसने विसर्पी को उस बाज के मुंह में छोड़ दिया।
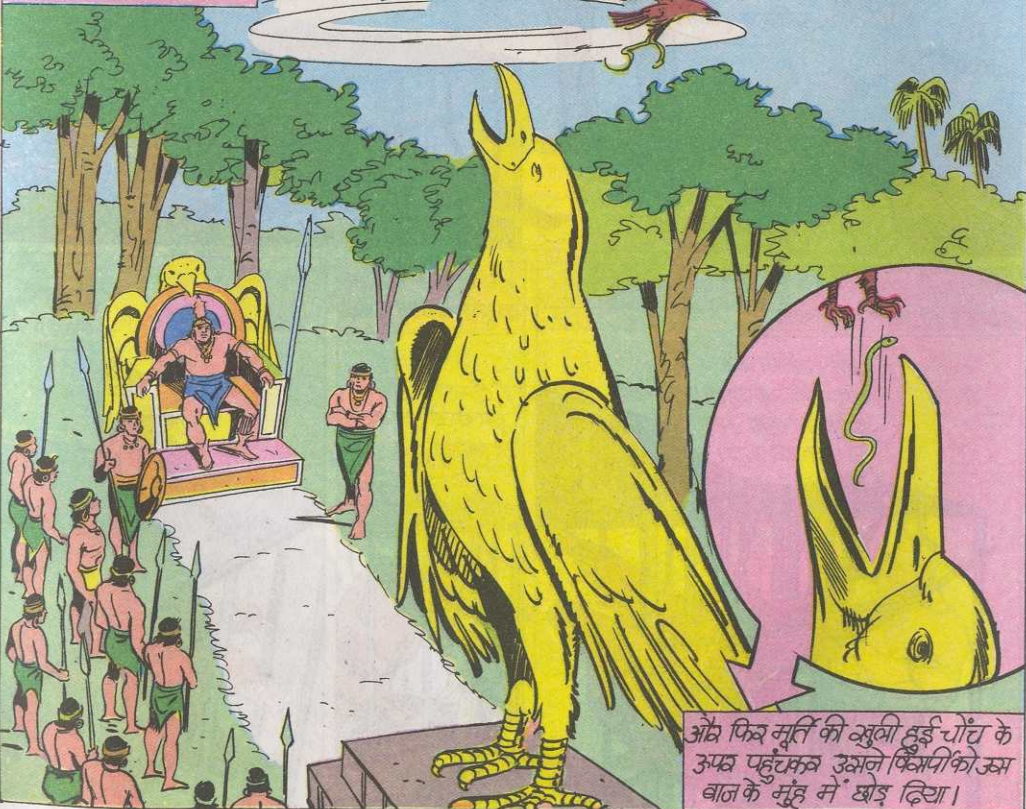
नागराज वहीं एक पेड़ पर छिपा इस दृश्य को देख रहा था—
ओह। यह क्या बला है। न जाने इस मूर्ति के गर्भ में क्या है, और विसर्पी किस हाल में होगी?

दिन में इन आदिवासियों को छेड़ना ठीक नहीं होगा। पहले देखता हूं कि विसर्पी को छोड़कर यह बाज कहां जाते हैं?
और अगले ही पल वह पुनः बाज के पंजों में जकड़ा उड़ गया।

ओह! इतने सारे बाज और यह गैंडा ... यह जरूर इनका प्रशिक्षक होगा।
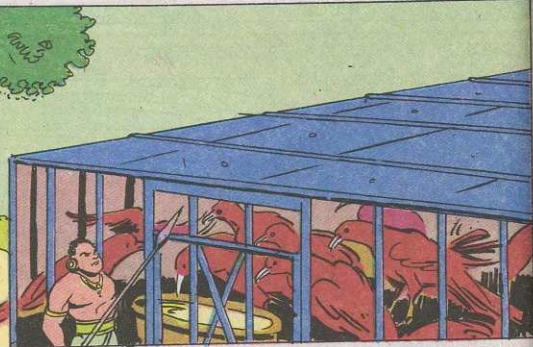
नागराज को एक पेड़ पर छोड़कर बाज पिंजरे के दरवाजे में प्रविष्ट हो गया—
ओह! अंतिम बाज शाहुल भी आ पहुंचा। इसका मतलब आज दो बाज मारे गए।

और बाजों के प्रशिक्षक बाजूली के जाने के बाद—
हूं... तो मुझे इन बाजों को खत्म करना है।

किन्तु कैसे?

तभी अचानक उसके दिमाग में एक विचार कौंधा –
वाह! अगर मैं इनके पीने के पानी में विष मिला दूं तो यह पानी पीते ही समाप्त हो जाएंगे।

नागराज पिंजरे के दरवाजे को खोलकर अंदर घुस गया –
है तो यह अमानवीय कार्य ही, किन्तु इतनी बड़ी नाग जाति की रक्षा के लिए मुझे इन कुछ बाजों की बलि लेनी ही पड़ेगी।
क्वैंक
क्वैंक
किन्तु उसके अन्दर घुसते ही बाजों ने शोर मचाते हुए उस पर हमला कर दिया।

नाग जाति की रक्षा के लिए नागराज उन पचास खूंखार दरिन्दों के बीच घुस गया था –
उफ! अरे, इनके शोर मचाने से तो इनका प्रशिक्षक सतर्क हो जाएगा!

बाज अपनी चोंचों व पंजों से उस पर हमला करने लगे –

उफ! मुझे अपनी आंखें इनके प्रहारों से बचानी होंगी।

बाजों – घातक प्रहारों को मुश्किल से सहते हुए आखिर नागराज ने पानी को अपनी फुंफकार से विषैला कर ही दिया –
फुस्स्स्ऽऽ
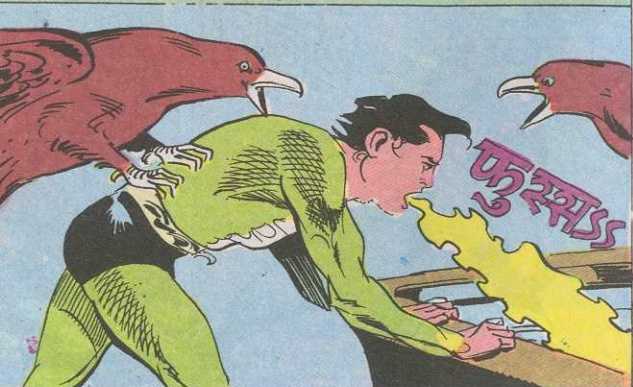
किन्तु तभी-
तड़ाक
यह था बाजों का प्रशिक्षक बाजूली जो बाजों का शोर सुनकर वहां आ गया था-
कौन है रे दुष्ट? बाजूली के बाजों को मारने आया है?
इन शैतानों को तैयार करने वाले शैतान तुझे यहां तेरी मौत खींच लाई है।
और फिर वह पिंजरा एक अखाड़ा बन गया जिसमें एक तरफ नागराज था तो दूसरी तरफ इक्यावन पहलवान-
सावधान बाजूली!
शक्तिशाली प्रहार के फलस्वरूप बाजूली उछला और-
धड़ाम
किन्तु बाजूली फुर्ति से उठा और दोनों भिड़ गए एक-दूसरे से-
दोनों ही शक्ति में एक-दूसरे से बढ़कर थे
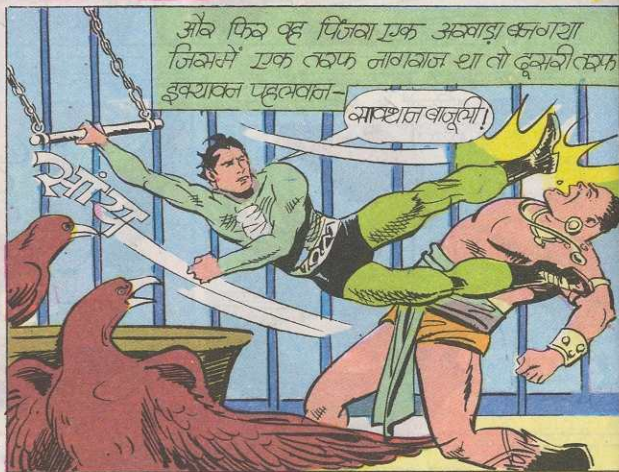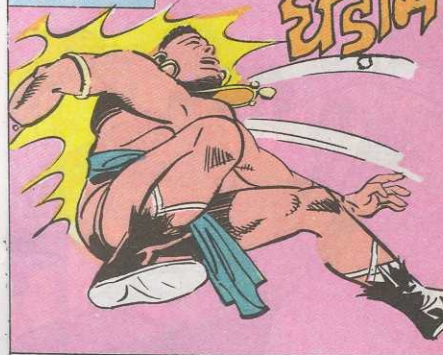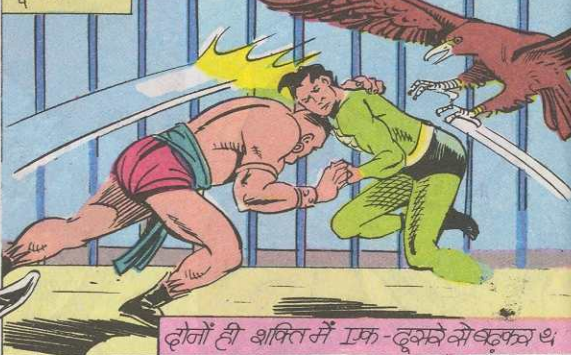
परन्तु नागराज को साथ ही बाजों का भी सामना करना पड़ रहा था—

टक्कर बेजोड़ थी दोनों की—

नागराज बाजूली का भी सामना कर रहा था—

चमत्कारी शक्तियों का मालिक बाजूली अब क्रोध से कांप उठा—

अरे दुष्ट, अब बहुत खेल हो चुका। ले बच अब मेरी मानसिक शक्ति के प्रहार से।

और उस जबरदस्त मानसिक शक्ति के प्रहार के फलस्वरूप—

नागराज उछलकर दूर जा पड़ा—

कड़ाक

उफ! यह तो बहुत खतरनाक है।
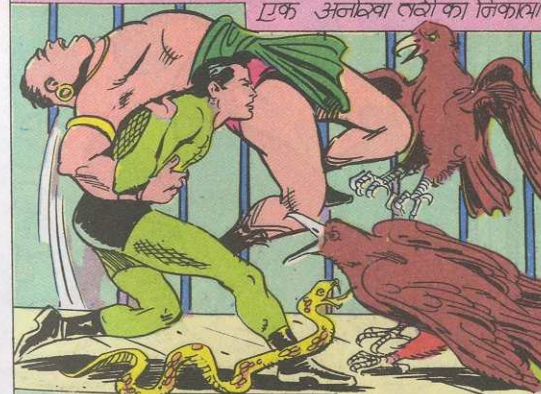
और अगले कुछ ही जबरदस्त प्रहारों ने...

... नागराज को बेदम कर दिया—

हाय! उफ नहीं!

नागराज की शक्ति जवाब दे चुकी थी। वह खड़ा न रह सका-
बचा लिया तुझे इस बाज ने बेटा, पर अब नहीं बचेगा।
उफ! लगता है बचूंगा नहीं। दिमाग से काम लेना होगा।
बाजूरी उसकी तरफ बढ़ा।

बाजूरी ने नागराज को बांहों में कसकर जैसे ही उसे पकड़ा-
फुस्स
नागराज ने घातकविष उसके मुंह पर उगल दिया।

और नागराज का यह अचूक वार बाजूरी को महंगा पड़ा-
आह
वह त्योराकर गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

अब नागराज अपनी पूरी शक्ति बटोरकर खड़ा हुआ-
मुझे अभी और शैतानों का सामना करना है।

फिर नागराज काल बनकर उन बाजों पर टूट पड़ा-
फुस्स
नागों की मौत के दूत बाज नागराज की विषैली फुंफकार का सामना न कर पाए।

उफ! यह दोनों आखिरी हैं।

नहीं-नहीं, यह तूने क्या किया। मेरे वर्षों की मेहनत से सिखाए व पाले हुए मेरे सभी बाजों को मार दिया तूने।

किन्तु अब नागराज ने बाजूरी को संभलने का मौका नहीं दिया—
वह उछलकर बाजूरी के सीने पर सवार हो गया।

और जब तक उसके प्राण नहीं निकल गए उसने अपने पैर नहीं हटाए—
मरते वक्त यह जान ले दुष्ट कि मैं नागराज हूं और तूने अपनी मेहनत गलत काम में लगाई इसलिए तेरी जिन्दगी के साथ वह भी व्यर्थ गई।

फिर नागराज उस बेमिसाल अखाड़े में से इक्यावन पहलवानों को मार विजयी होकर बाहर निकल आया—
ओह, रात घिर आई है।

नागराज एक दिशा में बढ़ चला। आज उसे काम भी तो बहुत थे—
चलो बाजों का संकट तो हमेशा के लिए टला, पर अब मुझे विसर्पी, नागदंत व अन्य नागों को ढूंढना है।

कुछ देर बाद—
अरे, यह तो मैं समुद्र के किनारे पहुंच गया, किन्तु यह चमक कैसी? यह तो कोई जहाज है। और कबीले वाले भी मशालें लिए यहां खड़े इशारे कर रहे हैं।

राकी, फटाफट स्टीमर उतारो और आईलैंड पर पहुंचो।
और जल्दी ही राकी का स्टीमर द्वीप के किनारे आ लगा-
आओ राकी साहब, आओ, इसबार तो बहुत माल है आपके लिए।
हम भी तो माल लाए हैं तुम्हारा, सरदार कंगालू!
नागराज हैरान था यह सब देखकर-
यह तो स्मगलर लगते हैं, पर इनका यहां क्या काम? पीछा करके देखता हूं!
एक सुनसान स्थान पर वे सब ठिठक गए-
राकी साहब, अब इस काम में बहुत मुसीबतें आ गई हैं। आपको हमारा मेहनताना बढ़ाना होगा।
जरूर मैं बॉस से बात करूंगा।
एक आदिवासी ने बढ़कर जमीन पर लगा एक ढक्कन उठाया-
चलिए राकी साहब, आपको आपका माल दिखा दें।
और नागराज के देखते ही देखते वे सब उस रिक्त स्थान में समा गए-
अरे, यह तो सब अंदर उतर गए।
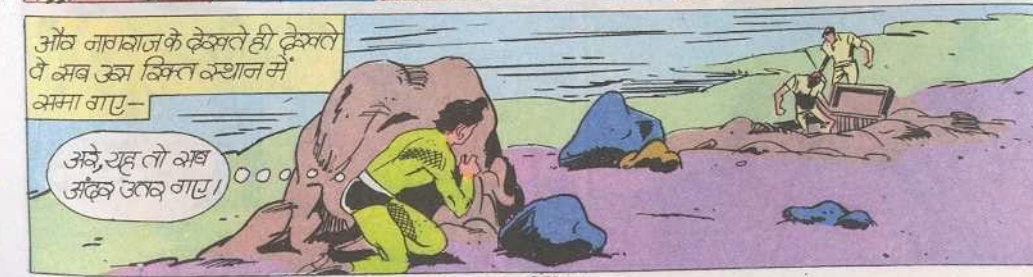
फिर नागराज भी उसमें उतर ही गया—
कोई बहुत बड़ा रहस्य लगता है। इस द्वीप पर कोई खतरनाक खेल खेला जा रहा है शायद।

और यह दृश्य देखकर तो दंग रह गया नागराज—
यह देखिए राकी साहब, कैसे शानदार नाग पकड़े हैं इस महीने हमारे बाजों ने। अब आप इन्हें ले जा सकते हैं। चाहें तो इनकी खाल बेचें, चाहे विष, चाहे ऐसे ही बेच दें इन्हें।

नागमणि द्वीप के सैकड़ों नाग वहां शीशे के बक्सों में कैद थे—
उफ! तो ये लोग पोचर्स हैं, सांपों की खाल बेचने वाले।

किन्तु एक पेटी में नागदंत भी बंद था—
अरे! यह क्या कंगालू सरदार, पेटी में आदमी।
हां, राकी साहब, शायद यह इच्छाधारी नाग है। हमने इसलिए इसे आजाद नहीं किया और यह आज ही पकड़ में आया है।

तभी एक गनमैन जोश में बोल पड़ा
राकी साहब, मुझे पता है यह कौन है, यह नागराज है। नागराज अपराधियों का काल... बॉस इसे देखकर बहुत खुश होंगे, राकी साहब!
नागराज! अच्छा प्रोफेसर नागमणि का आविष्कार। ठीक है, इसे संभाल कर ले चलो।

तत्पश्चात वे पेटियां बाहर निकाली जाने लगीं—
राकी साहब, अगली बार हमारा ध्यान रखिएगा।
जरूर।

परन्तु अगलीबार शायद आनी ही नहीं थी। आगे बढ़ते आदिवासियों के सामने सांपों की दीवार खड़ी थी—
ये बाहर कैसे आ गए?
हाएं, इतने सांप!
थू ऽऽ

डर के मारे इतने सांपों के साक्षात दर्शन से कइयों के हाथों से तो शीशे की पेटियां ही छूटकर जमीन पर बिखर गईं—
आज नहीं छोड़ेंगे ये! बरसों का बदला लेंगे हमसे ये आज।

और फिर शुरू हुई जंग सांपों की और इंसान रूपी शैतानों की—

जबकि नागराज—
आओ नागकुमारी विसर्पी!
देखते ही देखते नाग ने मानवी रूप धारण कर लिया।

नागराज! तुम यहां अलग खड़े हो, अरे! तुम तो बहुत घायल हो।
हां, नागकुमारी, किन्तु मैं अलग नहीं खड़ा। मैं शाकी पर नजर रखे हुए हूं जो नाग-दंत को लेकर भागने की फिराक में है।

उधर-
चलो जल्दी चलो, सब गड़बड़ हो गया लगता है। पर इसे तो हम बचाकर ले ही जाएंगे शिप में।

लेकिन नहीं-
रुक जाओ, राकी साहब, अब एक कदम भी आगे न बढ़ना।

चौंक उठा राकी, फिर भी उसने नागराज पर गोलियों की बौछार कर दी-
हाएं, एक और नागराज!
तड़ तड़ तड़
किन्तु-

उसे लगा कि उसकी गन में नकली गोलियां भरी थीं-
क्योंकि उसके चेहरे पर पड़ने वाला नागराज का प्रचण्ड घूंसा उसे असली लगा।

फिर दोनों आदिवासी भी पेटी फेंक कर नागराज पर झपटे-
खचाक
दोनों ने भाले नागराज के जिस्म में पैवस्त कर दिए

किन्तु नागराज के वार वह भी न सह पाए-
धड़ाक

नागकुमारी विसर्पी ने दौड़कर वह भाले नागराज के पेट से बाहर खींच दिए–

ओह, नागराज यह क्या हुआ?

कुछ नहीं विसर्पी, मुझे इन घावों से कुछ नहीं होता, मेरे घाव अपने आप ठीक हो जाते हैं।

राकी ने मौका देखकर गन सीधी की ओर–

पलक झपकते ही नागराज पलटा और–

आह

नागराज के शरीर में वास करने वाले नागानंद व नागनाथ ने अगले ही पल राकी के प्राण ले लिये।

नाग सम्राट नागराज व नागकुमारी विसर्पी सरदार कंगालू की बस्ती में पहुंचे, जहां नाग मानवों ने कंगालू को कैदी बना लिया था–

आओ नाग सम्राट नागराज राज सिंहासन ग्रहण करो।
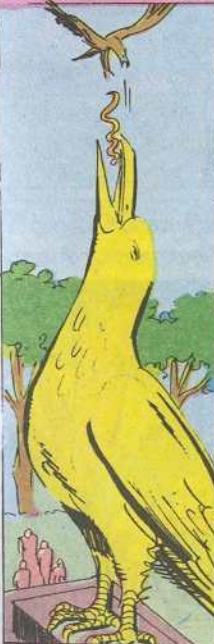
नागराज सिंहासन पर बैठ गया–
सरदार कंगालू! हमारी तुमसे कोई दुश्मनी नहीं है। हमने अपने दुश्मन बाजों को, उनके प्रशिक्षक बाजूली को समाप्त कर दिया है। अब हम अपने द्वीप पर चले जाएंगे।...
...किन्तु तुम्हें हमको वचन देना होगा कि आगे से ऐसा कोई घृणित कार्य तुम दुबारा नहीं करोगे।
हम तुम्हें वचन देते हैं नागराज!
तब कंगालू ने नागराज को अपने स्मगलरों से गठबंधन की पूरी दास्तान कह सुनाई–
सरदार कंगालू, हम तुम्हें दाल, मसाले व और भी बहुत सी चीजें देंगे, बदले में तुम्हें हमें सांप देने होंगे, सैकड़ों हजारों सांप।
फिर उनके बताए तरीके से हमने तुम्हारे द्वीप से सांप पकड़े–
चोंच में छोड़ा गया सांप सीधा नीचे जाता और वहां रखी पेटी में गिरता–
जिसे हमारे आदमी बंद कर देते।
सरदार कंगालू! क्या तुम्हें पता है यह शैतान कहां से आते थे और किसके लिए काम करते थे?
नहीं नागराज, ज्यादा तो मुझे नहीं पता, लेकिन एक बार मैंने शाकी से सुना था कि इनका बॉस कुवैत का एक शेख यूसुफ बिन अली खान है। पूरे विश्व में उसका जानवरों का व्यापार चलता है।
ओह!
फिर वह रात वहां गुजारकर नागराज, नागकुमारी व अन्य नागमानव अगले दिन अपने द्वीप पर लौट चले–
नागराज, आज तुमने सम्पूर्ण नागमणि द्वीपवासियों को अपना ऋणि बना लिया।
लेकिन नागराज के मस्तिष्क में केवल दो नाम हथौड़े की तरह बज रहे थे–
यूसुफ बिन अली खान।
नागदंत।